अपने बारे में भूल जाओ
(4:8-14)

पिछले पाठ में, हमने ''जब शैतान मुश्किल में डाल दे'' विषय पर अध्ययन आरम्भ किया था। 1 से 7 आयतों से, हमने ये सुझाव निकाले थे: (1) अचम्भित न हों, (2) हिम्मत हार कर उसके आगे न झुकें, (3) और शैतान के हाथों की कठपुतली न बनें। 8 से 14 आयतों में हमने सभा के सामने पतरस का पक्ष देखा है। पतरस के शब्दों में एक सिद्धांत दृश्यमान है: पतरस अपने आप से अधिक मसीह और सुसमाचार को महत्व देता था।

आत्मा

पतरस अपनी सफाई में कहते समय ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण'' था (आयत 8क)। यीशु ने अपने चेलों को बन्दीगृह में डलवाए जाने के बारे में चेतावनी देते हुए कहा, ''इसलिए अपने अपने मन में ठान रखो कि हम पहले से उत्तर देने की चिन्ता न करेंगे; क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा, कि तुम्हारे सब विरोधी साम्हना या खण्डन न कर सकेंगे'' (लूका 21:14, 15)।[1] मैं यह तो नहीं जानता कि पतरस ने बन्दीगृह में रात कैसे बिताई,[2] परन्तु इतना जानता हूं कि उसने रातभर अपनी सफाई देने की तैयारी बिल्कुल *नहीं* की थी। ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण'' होने का अर्थ है कि वह आत्मा के नियन्त्रण में था। यीशु के आत्मा[3] ने ही उसके द्वारा महासभा (सन्हेद्रिन) से बात करनी थी।

विषय

हो सकता है कि सभा का प्रश्न ''तुमने यह काम किस सामर्थ से और किस नाम से किया?'' अस्पष्ट हो, परन्तु इससे पतरस के हित पूरे हो गए, क्योंकि इससे उसे उनको सुनाने के लिए एक विषय मिल गया। आत्मा की अगुआई में, उसने ''यह काम'' की व्याख्या करके उसे वह चंगाई बताया। ''हे लोगों के सरदारो और पुरनियो'' कहकर उसने आरम्भ करके कहा, ''इस दुर्बल मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है ... आज हमसे उसके विषय में पूछपाछ की जाती है कि वह क्योंकर अच्छा हुआ'' (आयतें 8ख, 9)। ''इस ... मनुष्य'' कहकर, पतरस ने सम्भवत: अपने पास खड़े उस आदमी के कन्धे पर हाथ रखा होगा (आयत 14)। परिस्थिति हास्यास्पद थी! पतरस को मालूम था और सभा को भी।

मुक्तिदाता

वस्तुत, फिर प्रेरित ने कहा ''यदि आप सचमुच उसके बारे में जानने में दिलचस्पी रखते हैं, जिसने उसे अच्छा किया तो मैं आप को बताऊंगा।'' उन्होंने पूछा था कि, ''तुमने यह काम किस *नाम* से किया है?'' पतरस ने ऐलान किया कि उस व्यक्ति को *यीशु* के नाम से अच्छा किया गया था:

> तो तुम सब और सारे इस्राएली लोग जान लें[4] कि *यीशु मसीह नासरी के नाम से* जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है (आयत 10)।

पतरस को अपनी जान की परवाह नहीं थी। यदि आपको अपनी सुरक्षा की चिंता होती तो आप देश के सबसे शक्तिशाली गुट पर मसीहा को क्रूस पर चढ़ाने का आरोप *नहीं* लगाते। पतरस को किस बात की चिन्ता *थी*? उसके लिए यीशु के नाम का महत्व अधिक था।

जब शैतान हमें मुश्किल में डाल दे, तो याद रखना चाहिए कि इसका महत्व कम है *हमारा* क्या होता है, परन्तु प्रभु के उद्देश्य का क्या होता है, यह ज़्यादा महत्वपूर्ण है![5]

पतरस की दृढ़ता देखें जब उसने कहा ''परमेश्वर ने [यीशु को] मरे हुओं में से जिलाया।'' याद रखें कि जिस बात ने सदूकियों को परेशान किया था, वह यह थी कि प्रेरित ''यीशु का उदाहरण दे देकर मरे हुओं के जी उठने का प्रचार कर रहे थे'' (आयत 2)। पतरस ने विवादपूर्ण विषयों को टाला नहीं – विशेषकर जब उसके श्रोताओं के लिए उन्हें *सुनना आवश्यक* था!

पत्थर

पतरस ने अभी आरोप लगाने बन्द नहीं किये थे। अब इस ''अनपढ़ और साधारण'' मछुआरे में धर्मशास्त्रियों के सामने पवित्रशास्त्र को उद्धृत करने का साहस था: ''यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया'' (आयत 11)। पतरस ने मसीह से सम्बन्धित कुछ आरम्भिक हवालों में से भजन संहिता 118:22 को उद्धृत किया।[6] पतरस ने ''तुम'' शब्द जोड़ कर उनके लिए इस भविष्यवाणी को व्यक्तिगत बना दिया: ''यह वही पत्थर है जिसे *तुम* राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना।'' राजमिस्त्री शब्द उनके लिए इस्तेमाल नहीं किया गया है जो कील ठोंकते या गारा लगाते हैं। इसे निर्माण कार्य में निगरानी करने वाले लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया: जिनमें वास्तुकार, ठेकेदार, निरीक्षक तथा फ़ोरमैन आते हैं। पतरस ने यहूदी नीति निर्माताओं पर अंगुली उठाई। ''तुम *अगुओं* ने,'' वह कह रहा था, ''मसीहा को ठुकरा दिया!''

उन्होंने मसीहा के बारे में अपनी मिथ्या धारणाओं के कारण उसे ठुकरा दिया: उनका विचार था कि जब मसीह आएगा तो बड़ी धूमधाम और समारोह के साथ आएगा, वह बहुत

बड़ी सेना का सरदार होगा, और अपने देश से रोमियों को खदेड़ देगा। वे सोचते थे कि वह यरूशलेम शहर से दाऊद के सिंहासन पर बैठकर राज्य करेगा और सारे फलस्तीन में आशिषों की भरमार लग जाएगी। जब यीशु आया, तो वह मसीह के विषय में उनकी आशाओं के बिल्कुल विपरीत था – सो उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। जिसे उन्होंने अस्वीकार किया था, उसी को परमेश्वर ने अपने स्वर्गीय काम के लिए ''कोने के सिरे का पत्थर'' बना दिया!

उन दिनों किसी इमारत को बनाने के लिए कोने के पत्थर का बड़ा महत्व होता था। निर्माण के लिए यह अति आवश्यक था। इससे ही नींव पूरी होती और शेष इमारत के भाग और दिशा का निर्धारण होता था।[7] यहूदियों ने कोने के पत्थर के लिए स्थान रख छोड़ा था (मसीहा के सम्बन्ध में उनके विचार के आधार पर); परन्तु जब यीशु आया; उसने आरम्भ ही उनकी आशा के अनुरूप नहीं किया! पूर्वधारणा और पूर्वकल्पना सच्चाई के भयंकर शत्रु हैं!

उद्धार

पतरस ने प्रचार के प्रहारों की बौछार कर दी, जिसने सभा का रूप बिगाड़ दिया। उसे अचेत करने के लिए उसने अन्तिम प्रहार किया: ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (आयत 12)। यूनानी भाषा में शब्द-क्रीड़ा है जिसे हिन्दी में व्यक्त नहीं किया जा सकता। आयत 12 में ''उद्धार'' उसी मूल शब्द से है जिससे पद 9 में ''अच्छा हुआ।'' जिस प्रकार उस भिखारी को शारीरिक चंगाई केवल यीशु ही दे सकता था, उसी प्रकार मनुष्यजाति के आत्मिक रोग को भी वही ठीक कर सकता है![8]

''*किसी दूसरे* के द्वारा उद्धार नहीं?'' यह कथन संकुचित तो है परन्तु है सत्य। यीशु ने कहा, ''*मार्ग* और *सच्चाई* और *जीवन* मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6[9])! पतरस ने यहां यीशु की हां में हां मिलाई थी। उसके श्रोता स्वयं को उद्धार पाये हुए समझते थे क्योंकि वे इब्राहीम की सन्तान थे और उनके पास मूसा की व्यवस्था थी। पतरस का कहना संक्षेप में यह था कि, ''तुम इब्राहीम या मूसा के द्वारा उद्धार नहीं पा सकते! तुम उद्धार केवल यीशु के नाम के द्वारा ही पा सकते हो!'' आज के धार्मिक जगत का दावा है कि यदि आप अच्छे काम करें, तो आप के लिए स्वर्ग में जाने के लिए हज़ारों रास्ते हैं। पतरस फिर कहता, ''नहीं! आप केवल यीशु के नाम के द्वारा ही उद्धार पा सकते हैं!'' सच्चाई, अपने स्वभाव से ही हमेशा संकुचित होती है।[10]

''हम'' शब्द पर ध्यान दें: ''जिसके द्वारा *हम* उद्धार पा सकें।'' पतरस ने अपना हाथ अपनी ओर, यूहन्ना, उस आदमी की ओर जो अच्छा हुआ था, सभा और वहां उपस्थित सभी लोगों की ओर घुमाया होगा। ''यदि हम में से *कोई* मछुआरा, भिखारी, याजक, पुरनिया, शास्त्री, सभा का अधिकारी, या कोई और भी उद्धार पाना चाहता है,'' वह बल दे कर कह रहा था, ''तो वह यीशु मसीह के नाम के द्वारा ही पा सकेगा!''

पतरस कह रहा था कि उसे सुनने वाले धार्मिक लोग *खोए* हुए थे। पतरस यह भी कह रहा था कि परमेश्वर ने इस गुट को एक और अवसर दिया था। जैसे उस लंगड़े आदमी को शारीरिक चंगाई मिली, उसी प्रकार सभा के सदस्य भी आत्मिक उद्धार पा सकते थे। अभी अधिक देर नहीं हुई थी; यीशु को रद्द करना और क्रूस पर चढ़ाना ऐसा पाप नहीं था कि ''क्षमा ही न हो।'' यदि वे उसे अब भी मसीहा स्वीकार कर लेते तो वे अब भी उद्धार प्राप्त कर सकते थे! परमेश्वर तो अनुग्रह करने वाला परमेश्वर है।

खामोशी

पतरस की बातों ने सभा को खामोश कर दिया! ''जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा[11] और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचज़्भा किया'' (आयत 13क)। ''अनपढ़ और साधारण'' का अर्थ था कि प्रेरितों ने (विशेष रूप से रब्बी की शिक्षा का) कोई *विधिवत* प्रशिक्षण नहीं पाया था और उनके पास नियमानुसार कोई पद भी नहीं था।[12] स्थापित धार्मिक दायरों में, पतरस और यूहन्ना नगण्य व्यक्ति थे! वे इतने अधिकार के साथ और स्पष्ट समझाकर कैसे बोल सकते थे? वे उन इकहत्तर शिक्षित पुरुषों को लाजवाब कैसे कर सके? सभा को इसका उत्तर मिला, उन्होंने ''उनको पहचाना कि ये यीशु के साथ रहे हैं'' (आयत 13ख)। इन शब्दों का अर्थ यह नहीं कि उन्हें पता नहीं था कि पतरस और यूहन्ना कौन थे,[13] न ही इनके अर्थ से यह सुझाव मिलता है कि सभा को पहली बार लगा कि ये लोग यीशु के चेले रहे थे। बल्कि, सभा ने अचानक महसूस किया कि पतरस और यूहन्ना *कितने* साहस और निर्णायक ढंग से बोल सकते थे। ये दो व्यक्ति इस प्रकार बातें कर सकते थे क्योंकि वे ''*यीशु* के साथ रहे थे।'' सभा ने देखा कि ''यीशु के साथ रहने से (इन्हें) क्या प्राप्त हुआ था!'' जब सभा के सदस्यों को कालांतर में यीशु के साथ शब्दों की जंग याद आई होगी तो उनके चेहरे उतर गये होंगे। यीशु ने भी विधिवत प्रशिक्षण नहीं पाया था (ध्यान दें यूहन्ना 7:15), परन्तु धर्मशास्त्र के विषयों पर वे जब भी उससे भिड़े, उन्हें उससे मात ही मिली थी।[14] उन्हें लगता था कि संकट का समय टल गया, परन्तु यहां तो यीशु कई गुणा हो गया था – वह एक नहीं बल्कि अनेक बना हुआ था, जो उन्हें वैसे ही बांध के रख सकता था जैसे यीशु ने बांधा था! उनके लिए यह कितने अपमान की बात थी!

शैतान द्वारा मुश्किल में डालने पर बहुत जल्द ही पता चल जाता है कि हम ''यीशु के साथ'' रहे हैं या नहीं। यदि हमारे विचार स्वकेन्द्रित हैं, तो हमारे अन्दर उसका आत्मा नहीं है जिसने ''अपने आप को शून्य कर दिया।'' फिर, ''अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु भी सह ली'' (फिलिप्पियों 2:7, 8)। यदि हमारे मनों में भय रहता है, तो हमने उसके वचन से नहीं समझा कि उस वचन का क्या अर्थ है जो उसने कहा कि ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो'' (यूहन्ना 14:1, 2)। हो सकता है कि हम पतरस और यूहन्ना की तरह आत्मा के चमत्कारिक प्रदर्शन के लिए ''परिपूर्ण'' न हों; परन्तु हम जानते हैं कि हमारी सहायता के

लिए परमेश्वर का आत्मा हमारे साथ है,[15] और यदि प्रेरितों की तरह ही हम यीशु को समर्पित हैं, तो हम भी शैतान के भीषण आक्रमणों का सामना बड़े साहस और दिलेरी के साथ कर सकते हैं (याकूब 4:7)।

पतरस द्वारा बोलना बन्द करने के बाद वहां दर्दनाक चुप्पी छा गई। ''और उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था, उनके साथ खड़े देखकर, वे विरोध में कुछ न कह सके'' (आयत 14)। वे जानते थे कि वहां आश्चर्यकर्म हुआ था (आयत 16)। अपनी आंखों के सामने उसे देखकर, ''वे कुछ नहीं कह सके''।

यह तथ्य कि ''वे विरोध में कुछ न कह सके'' पुनरुत्थान की वास्तविकता की शक्तिशाली गवाही है। पतरस द्वारा कही गई मुज़्य बातों को आयत 10 में फिर से देखें: (1) उस सभा के लोगों ने ही यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था; (2) परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाया; (3) जी उठे यीशु ने ही उस व्यक्ति को, जो उनके सामने खड़ा था, चंगा किया था। सभा के सदस्य यीशु को क्रूस पर चढ़ाने में अपने योगदान से इन्कार नहीं कर सके; वे यह भी इन्कार नहीं कर सके कि वह व्यक्ति अच्छा हुआ था। इसलिए वे इससे इन्कार नहीं कर सकते थे कि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिला दिया था!

मसीही लहर अति संवेदनशील और तरुण अवस्था में थी। इसे समाप्त करने के लिए, इन शत्रुओं को केवल इतना ही प्रमाणित करने की आवश्यकता थी कि यीशु मुर्दों में से जी नहीं उठा। उनको केवल यीशु की देह ही दिखानी थी, या फिर कम से कम इसकी तर्कसंगत व्याज़्या कि उसकी देह का क्या हुआ।[16] वे इन दोनों में से एक भी नहीं कर सकते थे। आज भी कुछ लोग जी उठने को नकारने के प्रयास करते ही रहते हैं। यदि ऐसा हो सकता, तो नास्तिक लोग तभी कर देते जो उस समय वहीं थे, जहां पहली बार जी उठने का प्रचार किया गया! तथापि, वे कुछ भी कहने में असमर्थ थे!

सारांश

8 से 14 आयतों में पतरस ने अपनी सफाई देते समय, जो कुछ *कहा* और जिस प्रकार का *व्यवहार किया* उस सब में यीशु को महिमा दी गई। मुझे नहीं लगता कि शैतान द्वारा हमें मुश्किल में डालने पर इससे अच्छा और ढंग हो।

विज़ुअल-एड नोट्स

कोने के मुज़्य पत्थर के रूप में यीशु को ठुकरा दिए जाने को इमारत का एक रेखाचित्र बनाकर दिखाया जा सकता है, जिसमें कोने के पत्थर की जगह खाली छोड़ी गई हो। खाली छोड़ी गई जगह मसीह के सज़्बन्ध में यहूदियों की अवधारणा को दर्शाती है। एक तरफ एक कोने के पत्थर के आकार का रेखाचित्र बनाएं। यह पत्थर यीशु का प्रतिनिधित्व करता है। ध्यान दें कि यह पत्थर उस स्थान में फिट नहीं होगा। इस कारण इसे ठुकरा दिया गया था।

(इस बात को चित्रित करने के लिए आप एक पुरानी लोकोक्ति का उपयोग कर सकते हैं: ''चौरस कील गोल छेद में नहीं लग सकती।'' लकड़ी के एक टुकड़े में गोल छेद करें। फिर उसी गोल छेद के व्यास की एक चौरस कील बनाएं। गोल छेद मसीह के बारे में यहूदियों की अवधारणा को दर्शाता है, जबकि चौरस कील यीशु का प्रतिनिधित्व है।)

पादटिप्पणियां

[1]लूका 12:11, 12; मत्ती 10:17-20 भी देखिए। ध्यान दें कि यह वायदा प्रेरितों के साथ था, सभी प्रचारकों के साथ नहीं। मेरे और आपके लिए ''पहले तैयारी करना'' आवश्यक है। [2]पतरस और यूहन्ना ने बन्दीगृह में प्रार्थना करते और परमेश्वर की स्तुति गाते हुए रात बिताई होगी जैसे बाद में पौलुस और सीलास ने भी किया (16:25)। [3]देखिए 16:7. पवित्र आत्मा के बात करने का यह एक और ढंग है। [4]संक्षेप में उसने कहा, ''मैं चाहता हूं कि जगत जान ले!'' [5]कभी-कभी हमारी और परमेश्वर के राज्य की रुचियां एक दूसरे के साथ जुड़ी होती हैं। हमें इस बात की तब तक अधिक चिन्ता नहीं होनी चाहिए कि हमारे साथ क्या होता है *जब तक* हमारे विरुद्ध झूठे आरोप यीशु के नाम बदनामी का कारण नहीं बनते! [6]यीशु ने इस पद को मरकुस 12:10 में स्वयं पर लागू किया। मूल संदर्भ में, ठुकराया हुआ पत्थर इस्राएल को भी कहा जा सकता है, जिसे अन्य देशों ने ठुकराया, परन्तु परमेश्वर के द्वारा उसे प्रयुक्त किया गया। जैसे आम तौर पर होता था, इस्राएल ने परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा नहीं किया, परन्तु इन उद्देश्यों को फलदायक बनाने के लिए मसीह के आने तक छोड़ दिया गया। फिर पूरी तरह से, यह पद मसीह से सम्बन्धित भविष्यवाणी के रूप में पहचाना जाता था और है। [7]उनके पास वे औज़ार व तकनीक नहीं थी जो आज हमारे पास है। जिस प्रकार से आज हम इमारतें बनाते हैं, इसमें कोने के पत्थर (या ईंट या लकड़ी के टुकड़े) का इतना अधिक महत्व नहीं होता जितना तब था, सो हो सकता है कि अब इस उदाहरण का प्रभाव उतना न हो जितना तब था। इसलिए, कुछ अनुवादों (जैसे कि NEB) में ''मुख्य पत्थर'' या इस विचार को व्यक्त करने के लिए इसके समान कोई और शब्द है। हम में से अधिकांश यह समझ सकते हैं कि पत्थरों के मार्ग में मुख्य पत्थर (केन्द्रीय पत्थर) के न होने का क्या अर्थ होगा! [8]आगे दिए गए प्रवचन नोट्स में, मैं इन शब्दों को मुख्यत: धार्मिक जगत पर लगाता हूं जो यह सोचता है कि हम किसी और ढंग से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। तथापि, रिचर्ड रोजर्स ने संकेत दिया है कि ये शब्द सही तौर पर कलीसिया पर लागू होते हैं। यदि हम सावधान नहीं रहते, तो हम खोए हुओं को परिवर्तित करने के लिए मसीह पर निर्भर रहने के बजाय अपने कार्यक्रमों और मानवीय योग्यताओं पर निर्भर हो सकते हैं! [9]यूनानी रचना में भी इस पर बल दिया गया है। [10]दो और दो हमेशा चार होते हैं। ये कभी भी पांच नहीं हो सकते। संकीर्ण सोच भी इसी प्रकार का सत्य है।

[11]साहस लोगों के बीच बोलने के लिए चेलों का विशेष गुण था (9:27, 28; 13:46; 14:3; 18:26; 19:8; 26:26)। यह आरम्भिक कलीसिया के विकास के ''भेद'' का एक और तत्व था। [12]विधिवत शिक्षा का लाभ है, परन्तु परमेश्वर के वचन का निष्ठापूर्वक प्रचार करने के लिए डिग्रियां कभी भी आवश्यक नहीं रहीं। अमेरिका में, विशेषकर दक्षिण में मसीह की कलीसियाएं, मुख्यता किसानों और व्यापारियों से बनीं जिन्हें थोड़ी सी या विधिवत शिक्षा नहीं मिली थी, परन्तु उनमें परमेश्वर के वचन का प्रचार करने की तीव्र इच्छा थी। [13]यूहन्ना से काइफा भली भांति परिचित था (यूहन्ना 18:15, 16)। [14]ध्यान दें मत्ती 21:23-27; 22:15-46. पहले पतरस और यूहन्ना ने देखा था कि सभा ने यीशु के साथ क्या व्यवहार किया था। अब सभा देख रही थी कि यीशु ने उनके साथ क्या व्यवहार किया था! [15]प्रेरितों 2:38 पर नोट्स देखिए। [16]यह महत्वपूर्ण है कि सभा ने वह उपहासजनक कहानी नहीं दोहराई कि पहरेदार सो गए थे और यह कि चेलों ने उसकी देह को चुरा लिया था (मत्ती 28:11-15)। इस कहानी ने एक अफ़वाह के रूप में अच्छा काम किया; परन्तु यदि सभा कानूनी सबूत के रूप में प्रस्तुत करती, तो पतरस उन्हें ''उसी ख भे पर ... लटका'' देता जो उन्होंने उसके लिए बनाया था। (तु. एस्तेर 7:10) क्योंकि यदि सिपाही ड्यूटी के समय सचमुच सो गए होते, तो उन्हें ईनाम नहीं, बल्कि मृत्यु-दण्ड मिलना था (तु. 12:19; 16:27)।